



पुष्कराबा-कानपुर देहात (उ.प्र.)। मोहोत्सवी जगदम्बा सरस्वती (गम्भा) के पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासमन अर्पित करने के परचातु समूह चित्र में कैबिनेट मंत्री रुक्मिणी सचान, भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती रेणुका सचान, ब.कु. ममता दीदी, ब.कु. अनुराग तथा अन्य।



भदक-ओडिशा। ब्रह्मकुमारियों शिव दर्शन मठियम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित रहे राजयोगी ब.कु. आत्मप्रकाश, माउंट आबू, विषयक सौतेशु शेखर महापात्र, म्युनिसिपैलिटी चैयरमैन गुलमकी दस्वजौ, आईआईसी टाउन थाना प्रभाशु मिश्रा, जलेश्वर सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. रंजु, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. मंजु, ब.कु. मधुसिमा तथा अन्य।



मुजफ्फरपुर-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर बिहार विधानसभा परिसर में ब्रह्मकुमारियों द्वारा आयोजित कार्यक्रम के परचातु विधानसभा अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार को ईश्वरीय सौहार्द भेंट करते हुए ब.कु. अनीता।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में हरियाणा मुख्यमंत्री नायब सिंह सेनो प्रतिनिधि कैलाश सेनो, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब.कु. सरोज दीदी, ब.कु. रामनिवास, ब.कु. भगवत, ब.कु. गीता, ब.कु. मधु, ब.कु. प्रियंका तथा अन्य की उपस्थिति रही।



हावरा-आनंदपुरी कॉलोनी (उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर श्रीराम गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में योगा करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. शान्ता बहन, ब.कु. मीना, रामपुर, ब.कु. दुर्गा व ब.कु. दिनेश। मौके पर उपस्थित रहे पूर्व आई पी एस, आदित्य प्रकाश वर्मा, रमेश अश्वथल, दशरथ अश्वथल तथा अन्य।



ओउससी-हरियाणा। सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान आइएसटीएम में निदेशिका, उप सचिवों, आर सचिवों और सरकारी अधिकारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब.कु. विद्याजी।

आत्मिक शक्ति का सूत्र रक्षाबंधन का सच्चा अर्थ

1 रक्षाबंधन का आध्यात्मिक स्वरूप

रक्षाबंधन केवल धागा बाँधने का उत्सव नहीं, बल्कि आत्मा को श्रेष्ठता और पवित्रता के सूत्र में बाँधने का पर्व है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची सुरक्षा भीतर की स्थिति से आती है। जब मन शांत और संकल्प श्रेष्ठ होते हैं, तब व्यक्ति जीवन की परिस्थितियों में भी सुस्थित अनुभव करता है।

2 रक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है?

रक्षा का अर्थ केवल बाहरी संकटों से बचना नहीं है। वास्तविक रक्षा है - अपने मन को नकारात्मक विचारों से, बुद्धि को भ्रम से और संस्कारों को कमजोरी से बचाना। जो व्यक्ति अपने भीतर की शक्तियों को जागृत कर लेता है, वह हर परिस्थिति में विजयी बनता है।

3 आत्मिक चेतना - सच्ची सुरक्षा का आधार

आध्यात्मिकता के अनुसार हम शरीर नहीं, आत्मा हैं। आत्मा का मूल स्वभाव शांति, प्रेम, सुख, पवित्रता और शक्ति है। जब हम इस आत्मिक चेतना में स्थित होकर कर्म करते हैं, तब जीवन में स्थिरता और संतुष्टि बढ़ती जाती है।

4 आत्मविश्वास और परमात्म संबंध

आत्मविश्वास केवल स्वयं की क्षमताओं पर भरोसा नहीं, बल्कि अपने आध्यात्मिक स्वरूप और परमात्म शक्ति पर विश्वास भी है। जब आत्मा परमात्मा से जुड़ती है, तब उसे भीतर से नई ऊर्जा और दिशा प्राप्त होती

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक पवित्र और प्रेरणादायी पर्व है। रक्षाबंधन रखा से इसे भाई-बहन के प्रेम और सुरक्षा के अर्थ के रूप में मकया जाता है लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से इसका संदेश इतने कहीं अधिक गहरा है। यह पर्व हमें यह ब्रिक्का है कि जीवन की वास्तविक रक्षा बाहरी सत्त्व से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति, श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ संस्कार और परमात्म संबंधों से आती है। जब आत्म स्वयं को परमात्मा से जोड़ करती है, तब जीवन स्थिरता और सुख से भरपूर होता है।

है। यही संबंध जीवन को निर्भय और शक्तिशाली बनाता है।

5 रक्षासूत्र का संकल्प

रक्षासूत्र हमें यह संकल्प दिलाता है कि हम अपने विचारों को पवित्र बनाएंगे, वाणी को मधुर रखेंगे और व्यवहार को श्रेष्ठ बनाएंगे। हमारा जीवन ऐसा बने कि हमारी उपस्थिति से दूसरों को शांति और सुख का अनुभव हो।

6 स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन

जब व्यक्ति स्वयं बदलता है, तब परिवार बदलता है और परिवार से समाज में परिवर्तन आता है। रक्षाबंधन हमें प्रेरणा देता है कि हम अपने संस्कारों की रक्षा करें और अपने जीवन को सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनाएं।

7 रक्षाबंधन का वर्तमान समय में महत्व

आज के समय में बाहरी उपलब्धियों के बावजूद मनुष्य भीतर से असुरक्षित अनुभव कर रहा है। ऐसे समय में रक्षाबंधन हमें भीतर की शक्ति जगाने, संबंधों को पवित्र बनाने और जीवन को मूल्यवान बनाने का संदेश देता है।

अइए इस रक्षाबंधन पर हम केवल एक धागा न बाँधें, बल्कि अपने जीवन को आत्मिक शक्ति, पवित्रता और ईश्वरीय स्मृति के सूत्र में बाँधें। यही सच्ची रक्षा है, यही आत्मविश्वास है और यही जीवन की वास्तविक विजय है।

संकल्प: "मैं आत्मिक स्वरूप की स्मृति में रहकर अपने विचार, संस्कार और व्यवहार को श्रेष्ठ बनाऊंगा तथा शांति और शक्ति का माध्यम बनूंगा।"



ओउससी-गुरुग्राम (हरियाणा)। भारतीय श्रद्धा सेना के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी डॉ. वैष्णव कोराव के अंतिम शांति रिट्रीट सेंटर आश्रम पर संस्थान के द्वी परचातु ईश्वरीय सौहार्द भेंट करते हुए राजयोगिनी ब.कु. अरुण दीदी।



मोहाली-पंजाब। मातृ दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रसिद्ध रम्याल सेनिका साहोबी कट्टावाल को ईश्वरीय सौहार्द भेंट करते हुए राजयोगिनी ब.कु. प्रेम दीदी।



श्रीनिकेतन-उत्तराखण्ड। मोहोत्सवी जगदम्बा सरस्वती के 61वें पुण्य स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धांजलि अर्पित करने के परचातु ईश्वरीय स्मृति में राजकुमार बालक, सेवाविभूत महाश्वरधन पंचाब नेरुनल बैंक, फलन राय गुप्त, सत्यम प्रोडक्शन मैनेजर, ब.कु. निर्मल एवं ब.कु. आरती।



भरनगर-ओडिशा। निर्मूर्ति शिव जयंती के अवसर पर जन-जन को परमात्म संदेश देने हेतु निकाली जाने वाली शोभा यात्रा के दौरान घुमसर उत्तर किराज के त्रिविक्रम परीट ऑफिसर हिमांशु शेखर मोहोती को ईश्वरीय सौहार्द भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. सतीषिनी।



मालपुरा-राज। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान खंड पूजा लोकेन शोधी को ईश्वरीय सौहार्द भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. जित बहन।



जोधपुर-उ.प्र.। ज्ञान धार्य करने के परचातु मोहन पाल, राजा प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक को ईश्वरीय सौहार्द भेंट करते हुए ब.कु. साधना।



पुष्पा-उ.प्र.। शिवरात्री जयंती में जयंती काव एवं ब्रह्मकुमारियों के संयुक्त कार्यक्रम में बाबाई के सम्बोधन विषय के लिए आयोजित दिन दिवसीय "रक्षाबंधन विचारधारा समारोह" में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. कृष्ण, योग प्रशिक्षक ब.कु. अशोक, ब.कु. जय, सत्यम योग प्रशिक्षक अरुनी अश्वथल, रमेश जीवन में सत्यम सारवन एवं सत्यम जगद्वल सेनोई जयश्री विशेष प्रशिक्षण कार्य, सत्यम बरद अश्वथल की निर्देशिका कीर्ती दीप वर्मा, मुख्य महाश्वरधन टेक्निकल एच.एच. रमेश, महाश्वरधन सोलर डायर, ऑफिसर सुधीरजयन सेनोई सारवर्ध, ऑफिसर काव के बरिष विद्या उपमेव सहित अन्य जगद्वल अश्वथल तथा प्रोत्साही बाबाई की उपस्थिति रही।